

DSE-1 – जैनदर्शनस्य इतिहासः संस्कृतिश्च

परिचयः – जैनधर्मदर्शनयोः इतिहासः प्राचीनो वर्तते। अत्र तस्यैव शास्त्रसम्मतवर्णनमस्ति।

प्रयोजनम्- छात्राः पत्रस्यास्य पठनेन जैनदर्शनस्येतिहासं ज्ञास्यन्ति तथा जैनसंस्कृतेः ज्ञानं करिष्यन्ति।

फलतांशः- जैनदर्शनस्येतिहासस्य ज्ञानं तथा च संस्कृतेः महत्त्वप्रतिपादनम्।

| कक्षा | सत्रार्द्ध | पत्रकोड | पाठ्यक्रमविवरणम् | क्रेडिट् | यूनिट | कालांश | | | | | |
|-----------------------|------------|----------|---|----------|-------|--------|-----------|---|---|---|-------|
| शास्त्री प्रथमवर्ष | प्रथम | DSE-1 | <p>जैनदर्शनस्य इतिहासः संस्कृतिश्च</p> <p>आधारग्रन्थाः -1. आदिपुराणम् (आचार्यजिनसेनः) 2. पुरुषार्थसिद्धयुपायः (अमृतचन्द्राचार्यः) सन्दर्भग्रन्थाः -1. जैनदर्शन मनन और मीमांसा (आचार्य महाप्रज्ञ) 2. जैनधर्म (पं. कैलाशचन्द्रशास्त्री)</p> | 4 | 4 | | | | | | |
| | | | | | | | यूनिट I | कालचक्रः, प्रागैतिहासिककाले जैनधर्मः, कुलकरव्यवस्था, त्रिषष्टिशलाकापुराणाः | 1 | 1 | 16-20 |
| | | | | | | | यूनिट II | तीर्थंकरपरम्परा, षट्कर्मव्यवस्था, दण्डव्यवस्था, समाजव्यवस्था च। | 1 | 1 | 16-20 |
| | | | | | | | यूनिट III | जैनस्य लक्षणं, जिनधर्मप्रवर्तकाः, जिनस्य लक्षणं, जैनपर्वणि- दशलक्षणपर्व, अष्टाहिनिकापर्व, क्षमावाणीपर्व(विश्वमैत्रीदिवसः), महावीरजयन्ति(महावीर त्रयोदशी), रक्षाबन्धनं, दीपावली च। | 1 | 1 | 16-20 |
| | | यूनिट IV | अष्टभूलगुणाः, पंचाणुव्रतानि, त्रीणि गुणव्रतानि, चत्वारि शिक्षाव्रतानि, सल्लेखनाव्रतञ्च, रात्रिभोजनत्यागव्रतम्, प्रतिमायाः स्वरूपं इत्यादीनि । | 1 | 1 | 16-20 | | | | | |

